शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

माह : जुलाई वर्ष : 2023

अंक : 34

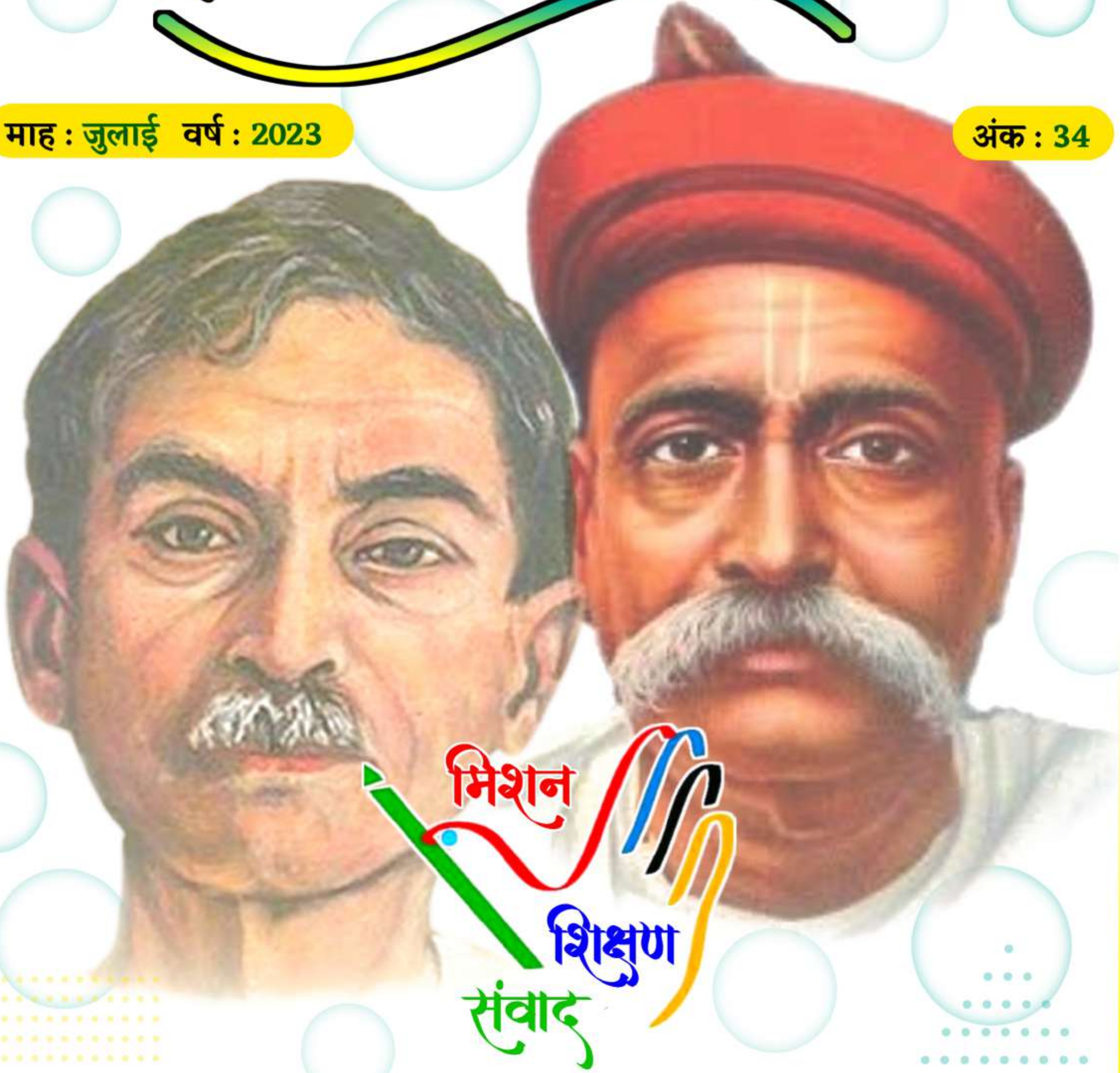

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

माह- जुलाई वर्ष- 2023 अंक- 34

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन

प्रांजल सक्सेना

सम्पादक

ज्योति कुमारी

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक्स एण्ड डिजाइन

सुशान्त सक्सेना

विशेष सहयोगी

शंखधर द्विवेदी

वन्दना यादव

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं संपर्क नं० :-
9458278429

ई मेल :-
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :-
www.missionshikahansamvad.com

शुभकामना संदेश

मनुष्य के लिए शिक्षा ठीक उसी प्रकार से आवश्यक है जिस प्रकार से उसके लिए पानी अर्थात वर्तमान में शिक्षा मनुष्य की अहम आवश्यकता बन चुकी है। यही वह आधार हैं जिस पर व्यक्ति के भविष्य की नीव रखी जाती है। शिक्षा के प्रति स्वामी विवेकानन्द का यह विचार बहुत ही महत्वपूर्ण है- "जिस शिक्षा से हम जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों में सामन्जस्य स्थापित कर सकें, वास्तव में वही शिक्षा कहलाने के योग्य है।" इसका अभिप्राय यह है कि सही मायने में हम उसे ही शिक्षा मान सकते हैं जिससे हम विचारों में सामन्जस्य स्थापित करते हुए जीवन जीने की कला का विकास अपने आप में कर सकें।

शिक्षा आधुनिक युग में एक शक्तिशाली हथियार के रूप में है जिसके प्रयोग से हम समाज में बदलाव कर सकते हैं। यही वह माध्यम अथवा साधन है जिससे लोगों के विचारों में परिवर्तन किया जा सकता है। इसलिए शिक्षा का बहुत महत्व है। जिसने इसे नही समझा वह कठिनाई भरा जीवन व्यतीत करने की ओर बढ़ा है।

शिक्षा के उत्थान के लिए मिशन शिक्षण संवाद परिवार के द्वारा बहुत ही सराहनीय कार्य किया जा रहा है। इसके द्वारा प्रतिदिन नियमित रूप से बच्चों व शिक्षकों के लिए उपयोगी शिक्षण सामग्रियों आदि को उन तक पहुँचाया जा रहा है। मिशन परिवार के द्वारा ऑनलाइन मासिक पत्रिका सम्पादन का भी कार्य किया जा रहा है, जिसमें विभिन्न कॉलमों के अन्तर्गत बच्चों व शिक्षकों के द्वारा किए जा रहे अच्छे कार्यों को स्थान देते हुए इसे अधिकतम लोगों तक पहुँचाया जा रहा है।

मिशन शिक्षण संवाद परिवार के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे सकारात्मक कार्यों की मैं मुक्तकण्ठ से सराहना करती हूँ और भविष्य के लिए शुभकामनाएँ भी देती हूँ।

ऋचा सिंह,
खण्ड शिक्षा अधिकारी,
वि० ख०- बाबागंज, जनपद- प्रतापगढ़

सम्पादकीय

कोविड काल की विषम परिस्थितियों के बीच जहाँ विश्व आकस्मिक रूप से ठहर गया था। जिससे सभी गतिविधियाँ स्थिर हो गयी थी, चारों ओर चाहते हुए भी कुछ न कर पाने की बेबसी फैली हुई थी। उसी बीच मिशन शिक्षण संवाद परिवार अपने समर्पण एवं सकारात्मक सोच की शक्ति से बेबसी और विषमता से पार पाने की सतत कोशिश कर रहा था। मिशन शिक्षण संवाद परिवार की यही कोशिश अन्ततः सफल हुई और हम सब ऑनलाइन माध्यम से न सिर्फ हजारों शिक्षकों को तकनी-की ज्ञान देने में सफल हुए बल्कि बच्चों तक ऑनलाइन एवं ऑफलाइन शिक्षण सामग्री की फोटो कॉपी करवाकर भेज पाने में सफल हुए। जिससे बच्चों के एक बहुत बड़े वर्ग को शिक्षा एवं शिक्षण से सतत जोड़े रह पाने में सफलता प्राप्त हुई।

इन्ही अनेकों प्रयासों के बीच, संवाद के सहज और उपयोगी माध्यम के रूप में मिशन शिक्षण संवाद परिवार की मासिक पत्रिका "शिक्षण संवाद" आपके सामने प्रस्तुत है। आशा है कि सीखने - सिखाने के इस प्रेरक एवं अनुकरणीय संवाद के प्रयास हम सभी के लिए उपयोगी साबित होंगे। आप अपना फीडबैक व मार्गदर्शन जरूर भेजें, जिससे आवश्यकता एवं समयानुसार सतत सुधार की ओर आगे बढ़ा जा सके।

जय हिन्द!
सादर धन्यवाद!

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
मिशन गीत	1
विचार शक्ति	2
टी० एल० एम० संसार	3 - 4
प्रेरक प्रसंग	5 - 6
बाल साहित्य	7
बाल कविता	8
बाल कहानी	9
बात महिला शिक्षकों की	10
गतिविधि	11
योग विशेष	12
खेल	13
सदविचार	14

मिशन गीत

मिशन में ख़ास क्या है? आओ तुम्हें बता दें।
नवाचार भी सिखा दें, काव्यांजलि सुना दें।।

सारे गुणों से भरकर, अज्ञानता हटा दें।
सारा विकास करके, शिक्षित धरा बना दें।।
मिशन में ख़ास क्या है? आओ तुम्हें बता दें।।

नई नीतियाँ बनाकर, रुचिकर तुम्हें पढ़ा दें।
प्रतियोगिता कराकर, नया ज्ञान भी सिखा दें।।
मिशन में ख़ास क्या है, आओ तुम्हें बता दें।।

उत्साह से पढ़ें सब, उमंग से बढ़ा दें।
आओ हम अब मिलकर, सबको सफल बना दें।।
मिशन में ख़ास क्या है? आओ तुम्हें बता दें।।

बच्चों में ज्ञान लाएँ, सम्मान भी बढ़ा दें।
विज्ञान के इस युग को, यथार्थ में दिखा दें।।
मिशन में ख़ास क्या है,आओ तुम्हें बता दें।।

नवाचार भी सिखा दूँ, काव्यांजलि सुना दें।
मिशन में ख़ास क्या है? आओ तुम्हें बता दें।।

अर्चना यादव (प्रधानाध्यापक)
उ० प्रा० वि० परसू (कंपोजिट)
वि० ख०- सहार, जनपद- औरैया

विचारशक्ति

शिक्षण में संवाद की भूमिका

मित्रों अक्सर हम जीवन में जब भी किसी कठिनाई में स्वयं को फँसा हुआ पाते हैं तो सबसे पहला विचार हमारे मन में आता है कि हम अपनी कठिनाई किसे बताएँ और इसके लिए हमारे मन में पहला चित्रण उस व्यक्ति का ही होता है जिससे हम खुलकर अपने मन की बात कह पाते हैं, खुलकर संवाद कर पाते हैं। वह हमारे माता-पिता, जीवन साथी, शिक्षक, भाई-बहन या कोई मित्र भी हो सकते हैं।

"संवाद" अर्थात "कम्युनिकेशन" कई बार हमें जीवन में समस्याओं से बचाता है तो वही "संवादहीनता" अर्थात "कम्युनिकेशन गैप" कई बार हमारे जीवन में हमारे रिश्तों में नयी समस्याओं को जन्म देता है।

मित्रो हम सभी शिक्षक हैं और एक शिक्षक होने के नाते हमारा एक रिश्ता अपने विद्यार्थियों के साथ भी होता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर शिक्षण में संवाद की क्या भूमिका है?

जब ये सुकोमल नवपल्लवित बच्चे हमारे विद्यालय परिसर में नये ज्ञान की खोज में आते हैं तो संवाद एक अति आवश्यक कड़ी बन जाता है जो शिक्षण के प्रत्येक चरण में अर्थात शिक्षण के पहले, शिक्षण के दौरान और शिक्षण के पश्चात तथा अन्य किसी भी विद्यालीय गतिविधि में विद्यार्थी को शिक्षक से सकारात्मक रूप से जोड़े हुए रखता है। वास्तव में यह संवाद ही होता है जो इस पूरे अन्तराल को सफल बनाते हुए गुरु-शिष्य के पवित्र रिश्ते को प्रेम, अपनत्व व विश्वास भर देता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करें तो कई बार शिक्षण कार्य से इतर शासनादेशों के पालन में गैर-शैक्षणिक कार्यों में अतिसंलग्नता से संवाद में कमी देखी गयी है और इसका परिणाम अध्यापक के प्रति विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता और असन्तोष या डर के रूप में सामने आया है। स्थिति गंभीर ना हो इसके लिए आवश्यकता है आत्ममंथन की और समय रहते इस कम्युनिकेशन गैप को न्यूनतम से न्यूनतम बनाने की और मुझे हर्ष है कि मिशन शिक्षण संवाद निरन्तर इस पथ पर अग्रसर है और मैं हृदय तल से आभार व्यक्त करना चाहूँगी मिशन शिक्षण संवाद की टीम का, जिसकी वजह से आज मुझे भी अपने विचार आप सभी के साथ साझा करने का करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अन्त में आप सभी मिशन साथियों और शिक्षक भाइयों-बहनों को सम्बोधित करते हुए कहना चाहूँगी-

"संवाद से हो जाती है,
सभी समस्याएँ देखो हल।
शिक्षण में भी संवाद हो,
हर मिशन सिपाही की पहल।।
भय मुक्त विद्यालय परिसर,
निर्भय बच्चे जब होवेंगे।
खेल-खेल में होगी शिक्षा,
बचपन न वो खोवेंगे।।
डगर संवाद की न है मुश्किल,
आओ चलें हम मिलकर।
दिशा-दशा शिक्षा की बदलें,
शिक्षण संवाद के बल पर।।"

ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० विद्यालय जारी (भाग-1),
वि० क्षे०- बड़ोखर खुर्द, जनपद- बाँदा

टी० एल० एम० संसार

सामान्य ज्ञान

टी० एल० एम० का नाम- **मछली रानी सबको भाए।**
ज्ञान की बातें सब को बताए।।

आवश्यक साम्रगी- चार्ट रंगीन स्केच, कैंची, गोंद और सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित चार्ट।

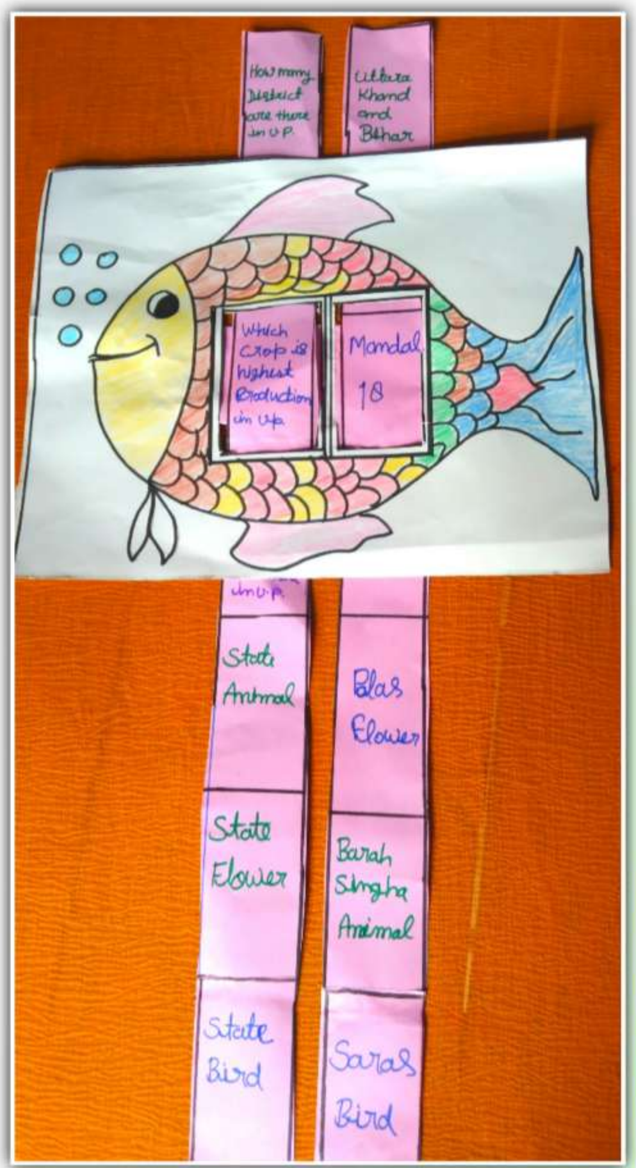

निर्माण विधि- सर्वप्रथम सबसे पहले कोई भी मनपसंद रंग का चार्ट लेते हैं। उस पर मछली का चित्र बनाते हैं। फिर मछली को भी रंग-बिरंगे स्केच से सजा देते हैं। इसके बाद मछली के पेट का बीच के भाग को दो छोटे - छोटे भागों में काट लेते हैं, इसके बाद जो भाग काटे गए हैं उनके बीच से गुजारने के लिए चार्ट की 2 लंबी पट्टी बनाते हैं और उसी कटे हुए भाग में उन प्रश्न एवं उत्तर की लिखी हुई पट्टियों को लगा देते हैं।

प्रयोग विधि- सामान्य ज्ञान से संबंधित एक पट्टी पर प्रश्न लिख देते हैं और जो दूसरा भाग है उस पर उनके प्रश्नों के उत्तर लिखते हैं। किन्तु उत्तर को हम बिल्कुल प्रश्न के सामने वाले भाग में नही लिखते हैं बल्कि ऊपर-नीचे लिखते हैं। जिससे जैसे हम प्रश्न पढ़ते हैं दूसरे भाग पर दूसरी पट्टी को सिर्फ रख देते हैं और फिर बच्चों से प्रश्न पूछते हुए दूसरी पट्टी से उत्तर निकलवाते हैं। जिसमें एक विशेष जिज्ञासा बच्चों के अंदर उत्पन्न होती है और वहाँ पूर्ण रूप से तन्मय होकर एकाग्र होकर प्रश्नों को सुनते हैं और सोच विचार कर उत्तर देते हैं।

टी० एल० एम० से लाभ-

1) बच्चे मछली का चित्र बनाना सीखेंगे।

2) बहुत ही आसानी से एवं खेल-खेल में सामान्य ज्ञान जानेंगे।

3) सभी बच्चे जिज्ञासु बनेंगे।

4) इस टी० एल० एम० की सहायता से स्वर व्यंजन, गिनती, हिन्दी, अंग्रेजी में बहुत आसानी से बच्चों को सिखाने में सहायता मिलेगी।

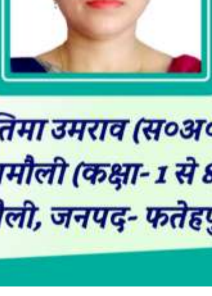

प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उ० प्रा० वि० अमौली (कक्षा- 1 से 8),
वि० ख०- अमौली, जनपद- फतेहपुर

प्रेरक प्रसंग
बाल गंगाधर तिलक

बाल गंगाधर तिलक का मूल नाम केशव गंगाधर तिलक। बाल गंगाधर तिलक से लोकमान्य तिलक कैसे बने इसका भी एक कारण है जनता के बीच प्रिय होना। भारतीय जनता उनको अपना प्रिय नेता मानती थी इसलिए लोकमान्य उपनाम दिया। भारत भूमि को गौरवान्वित होने का अवसर 23 जुलाई 1856 को आया। इनका जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के चिखली में गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर तिलक और माता का नाम पार्वती बाई गंगाधर। इन्होंने आधुनिक कॉलेज में शिक्षा पाई थी। तिलक अंग्रेजी सभ्यता को बिगड़े रूप में अपनाने के प्रबल विरोधी थे।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नायक के रूप में सदैव जीवन पर्यंत संघर्ष एवं नेतृत्व करते रहे। बाल गंगाधर तिलक एक भारतीय राष्ट्रवादी शिक्षक एवं समाज सुधारक के रूप में स्वतंत्रता दिलाने में प्रयासरत रहे। कहा जाता है कि भारतीय संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता रहे जिनको जनता ने 'लोकमान्य' उपनाम दिया। लोकमान्य तिलक एक महान समाज सुधारक भी थे और एक महान वकील भी। तिलक ने देश को आजादी दिलाने के लिए एक मराठी भाषा में नारा दिया - "स्वराज माझा जन्मसिद्ध अधिकार हक्क आहे आणि मी तो मिलवणारच" अर्थात स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसी में लेकर रहूँगा।

एक समय की बात है तिलक की माँ ने बड़े प्यार से कहा –"बेटा, ले ये दो टुकड़े मिठाई के हैं। इनमें से यह बड़ा टुकड़ा तू स्वयं खा लेना और छोटा टुकड़ा अपने दोस्त को दे देना। तिलक वह दोनों टुकड़े लेकर बाहर आ गए। उन्होंने अपने दोस्त को मिठाई का बड़ा टुकड़ा देकर छोटा स्वयं खाने लगे। माँ यह सब देख रही थी। उन्होंने अपने पुत्र को अन्दर बुलाया और बोली- "मैंने तुमसे बड़ा टुकड़ा खुद खाने और छोटा उस बच्चे को देने के लिए कहा था, किन्तु तूने छोटा स्वयं खाकर बड़ा उसे क्यों दिया?" वह बोले –"माँ! दूसरों को अधिक देने और अपने लिए कम-से-कम लेने में मुझे अधिक आनन्द आता है।"

तो यह थी बाल गंगाधर से जुडी हुई एक घटना। इस एक छोटे से वाक्य में उन्होंने बहुत कुछ कह दिया। जिसे सुनकर उनकी माँ भी हैरान रह गई। सत्य यही है कि यदि मनुष्य अपने लिए कम चाहे और दूसरों को अधिक देने का प्रयत्न करेगा तो समस्त संघर्षों की समाप्ति हो जाएगी और स्नेह, सौजन्य की परिस्थितियाँ अपने आप ही उत्पन्न हो सकती हैं।

बाल गंगाधर तिलक से जुडी हुई एक और भी घटना है जोकि तिलक के स्कूली जीवन की है। एक समय था जब तिलक अपने स्कूल में थे, उनकी कक्षा के सारे बच्चे कक्षा में बैठकर मूँगफली खा रहे थे। जब सब मूँगफली खा रहे थे तो उसके छिलके कक्षा में ही फेंक रहे थे जिससे पूरी कक्षा में गंदगी फैल गई। कुछ समय बाद उनके शिक्षक कक्षा में आए, उन्होंने देखा चारो तरफ गंदगी फैली हुई है। वह यह देखकर बहुत नाराज हो गए। उन्होंने सभी को चिल्लाया और अपनी छड़ी निकाल कर सभी बच्चों को लाइन से हथेली पर 2-2 बार मारने लगे। अब जब तिलक की बारी आई तो तिलक ने छड़ी खाने के लिए अपना हाथ आगे नही किया। उनके शिक्षक ने कहा- "अपना हाथ आगे बढ़ाओ", तब उन्होंने कहा- "मैंने कक्षा को गंदा नही किया है इसलिए मैं मार नही

खाऊँगा।"

यह बात सुनते ही शिक्षक का गुस्सा और बढ़ गया। फिर शिक्षक ने उनकी शिकायत जाकर प्राचार्य से की। इसके बाद क्या होना था तिलक के घर पर उनकी शिकायत की गई और उनके पिताजी को स्कूल बुलाया गया। जब उनके पिता स्कूल आए तो उन्होंने कहा- "मेरे बेटे के पास पैसे ही नही थे, वो मूँगफली किसी भी हालत में नही खरीद सकता।"

तो यह घटना थी उनके साहस की। उस दिन अगर वह शिक्षक के डर से मार खा लेते तो उनके अंदर का साहस बचपन में ही ख़त्म हो जाता। उसके बाद बाल गंगाधर तिलक अपने जीवन में कभी भी अन्याय के सामने नही झुके।

इस बहुत छोटी सी घटना से हम सभी को एक सबक मिलता है। यदि गलती न हो तो उसे कभी स्वीकार न करें। जब हम उसे स्वीकार कर लेते हैं तो यह माना जाता है कि उस गलती में हम भी शामिल थे। इसलिए कभी भी अन्याय के सामने ना झुकें।

प्रतिमा उमराव (स०अ०),
उ० प्रा० विद्यालय अमौली (1-8),
वि० ख०- अमौली, जनपद- फतेहपुर

बाल साहित्य

पर्यावरण सरंक्षण के प्रति संवेदनशील करता बाल साहित्य फुलवारी

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) 2005 द्वारा पाठ्यचर्या निर्माण के पाँच निर्देशक सिद्धान्त निर्धारित किए गए हैं। इन निर्देशक सिद्धान्तों में से पाँचवाँ सिद्धान्त इस बात पर बल देता है कि बच्चे में एक ऐसी पहचान का विकास किया जाए कि जिसमें प्रजातांत्रिक राज व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय चिन्ताएँ समाहित हों। राष्ट्रहित के प्रति बच्चों को जागरूक करने में बाल साहित्य महती भूमिका निभा रहे हैं। राष्ट्रहित चिन्तन के क्रम में बच्चों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने में उनको एक ऐसे बाल साहित्य के साथ जोड़ना होगा जिसमें प्राकृतिक सम्पदा जैसे- पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं, नदियों, तालाबों, पहाड़ों, भूमि, वायु, ओजोन परत सरंक्षण आदि समाहित हों। बाल मन अत्यन्त सरल और संवेदनशील होता है कहानी, कविता सुनकर उन पर सहज ही विश्वास कर लेता है। इस लेख के माध्यम से हम कक्षा-4 की पुस्तक फुलवारी में दिए गए उन कविताओं और कहानियों की चर्चा करेंगे जिनके माध्यम से हम बच्चों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बना सकते हैं।

- प्रसिद्ध कवि श्री सोहन लाल द्विवेदी की कविता (हे जग के स्वामी) की ये पंक्तियाँ- चमक रहे हैं लाखों तारे..... चमक रहे हैं सब जल-थल के द्वारा स्वच्छ प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति बच्चों को प्रेरित किया जा सकता है।
- जल ही सभी के जीवन का आधार है, परन्तु आज हम जल संकट की विकट समस्या से जूझ रहे हैं। प्यासी मैना कहानी के माध्यम से बच्चों को जल सरंक्षण, पशु पक्षियों की सुरक्षा व वृक्षारोपण हेतु जागरूक किया जा सकता है।
- महान कवियत्री महादेवी वर्मा जी की कविता कहाँ रहेगी चिड़िया? की इन पँक्तियों आँधी आई जोर-शोर से......के द्वारा आँधी जैसी प्राकृतिक आपदा व जंगलों और पेड़-पौधों के कम होने से पशु-पक्षियों के आवास संकट के प्रति हम बच्चों को सचेत कर सकते हैं।
- मलेथा की गूल कहानी के द्वारा बच्चों को बंजर भूमि की समस्या व जल और नदियों के महत्व को समझाया जा सकता है।
- प्रकृति के सुकुमार कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत जी की कविता ग्राम श्री के द्वारा बच्चों को वसन्त ऋतु में होने वाले परिवर्तन और स्वच्छ प्राकृतिक पर्यावरण के साथ जोड़ा जा सकता है।
- ओणम (निबन्ध), टेसू राजा (कविता) के द्वारा क्रमशः स्वच्छ प्राकृतिक पर्यावरण व फसलों के महत्त्व के विषय में बच्चों को बताया जा सकता है।

साथ ही हम शिक्षकों को यह भी ध्यान देना होगा कि बच्चों के अन्दर ऐसे व्यक्तिगत सामाजिक गुणों का विकास करें कि वे पर्यावरण के प्रति स्वतः प्रेरित हो सकें जैसे- यदि कही पानी का नल खुला हो तो उनके अन्दर स्वतः ही यह भाव होना चाहिए कि जल की बरबादी राष्ट्रीय क्षति है और वह नल को बन्द कर दे, कहने का तात्पर्य यह है कि उन्हें नल बन्द करने के लिए फोर्स न करना पड़े बल्कि वे इसके लिए स्वतः प्रेरित हो।

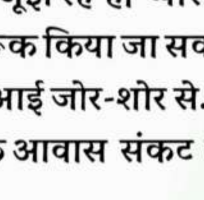

इस प्रकार निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि फुलवारी पुस्तक में दी गई कविताओं और कहानियों के माध्यम से बच्चों को सरलता से पर्यावरण के साथ जोड़ा जा सकता है। जब बच्चे पर्यावरण के महत्त्व को समझेंगे और प्रकृति को अपना मित्र और सहयोगी के रूप में देखेंगे तब वे स्वतः ही पर्यावरण सरंक्षण के प्रति संवेदनशील बन सकेंगे।

अर्चना गुप्ता (प्रभारी प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० हाफिजपुर हरकरन,
वि० क्षे०- खजुहा, जनपद- फतेहपुर

बाल कविता

सैर सपाटा

आओ करें हम सैर-सपाटा,
घूम के आएँ बाग-बगीचा।
फूल खिले हैं रंग-बिरंगे,
मौज-मस्ती भरपूर करेंगे।।

लाल, नीला, पीला, जामनी,
सभी रंग के फूल दिखेंगे।
कुछ तुम लेना कुछ हमें देना,
फूलों से श्रृंगार करेंगे।।

रंग-बिरंगी तितलियाँ भी होंगी,
उनके पीछे हम भागेंगे।
जिसको जो रंग पसन्द होगा,
उस रंग के कपड़े पहनेंगे।।

आम, अमरूद, जामुन, बरगद,
बहुत सारे पेड़ भी होंगे।
लटकेंगे हम पकड़-पकड़कर,
कूद-फाँद वहाँ पूरी करेंगे।।

खेलेंगे हम आँख-मिचोली,
बोलेंगे हम पक्षियों की बोली।
नाचेंगे हम मोर के जैसे,
गाएँगे हम मिल हमजोली।।

लड्डू पूरी सब खाएँगे,
ठण्डा पानी ले जाएँगे।
बर्फ, आइसक्रीम भी खाएँगे,
सैर-सपाटे पर जाएँगे।।

सीमा शर्मा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय निवाड़ा,
वि० क्षे०- बागपत, जनपद- बागपत

बाल कहानी

नटखट रामू

रामू एक नटखट लड़का था। उसका दोस्त था मनीष। वह शांत और आनंदप्रिय था। मनीष रामू को बहुत समझाता था कि वह अपना नटखटपन छोड़ दे और पढाई में मन लगाये अन्यथा उसे एक दिन पछताना पड़ेगा। मनीष की बातों का रामू पर कोई असर नही होता था। वह अपनी धुन का पक्का था।

एक बार रामू अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था। वहाँ खेलते-खेलते उसने कुछ कुत्तों को आते देखा। वह उनकी ओर दौड़ा। उसके दोस्तों ने उसे उस ओर जाने से रोका, किंतु वह हँसते हुए हाथ में डंडा लेके कुत्तों की तरफ दौड़ा और उन्हें डंडों से भगाने और मारने लगा। कुत्ते कुछ देर तक कुछ नही बोले और रामू के हाथ में डंडा देखकर भाग खड़े हुए। रामू उनके पीछे हो लिया।

इधर जब रामू के दोस्तों ने देखा कि वह कुत्तों के बीच अकेला है, कही कोई अनहोनी न हो जाए तो इस आशंका से वे खेल छोड़कर हाथों में डंडे लेकर उस ओर चल पड़े।

उधर घर और मुहल्ले में तलाशने पर जब मनीष को रामू का पता नही लगा तो किसी के बताने पर वह खेल के मैदान की ओर चल पड़ा।

इधर रामू के दोस्तों को रामू के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी।

वे सब तुरंत एक-दूसरे की ओर देखकर उस ओर दौड़ पड़े, जिधर रामू के चीखने-चिल्लाने की आवाजें आ रही थी। उधर से तब तक मनीष भी डंडा हाथ में लिए आ गया था। सभी रामू के पास दौड़े तो देखा कि रामू पर कुत्ते झपट रहे थे। सभी दोस्तों ने डंडों से कुत्तों को मार भगाया और किसी तरह रामू की जान बचायी। कुत्तों ने उसे कई जगह काट लिया था। मनीष ने उसके माता-पिता को सूचना दी और रामू को स्वास्थ्य केंद्र ले जाकर कुत्ते के काटने के इंजेक्शन लगवाये गये।

कुछ ही दिनों में रामू ठीक हो गया। उसके दोस्त मनीष ने उससे व्यंग्य में कहा कि-" चलो! खेलने चलें और वही पर बहुत से कुत्ते भी मिल जाएँगे।" रामू बोला-" कुत्तों से मुझे अब बहुत डर लगने लगा है। गलती मेरी है, मुझे खूँखार जानवरों को नही छेड़ना चाहिए। अब मैं पढाई में अधिक ध्यान दूँगा। हमारे स्कूल में ही अधिकांश पढाई खेल-खेल में और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से होती है। रोज पीटी और योग भी कराया जाता है लेकिन मैंने कभी इस पर ध्यान ही नही दिया।" यह सुनकर रामू के सभी दोस्त और माता-पिता बहुत खुश हुए, उनके मन से एक डर सदा के लिए दूर हो चुका था।

सीख-

हमें किसी को कभी नहीं सताना चाहिए, चाहें वह कोई भी प्राणी क्यों न हो।

जुगल किशोर त्रिपाठी (शिक्षामित्र),
प्राथमिक विद्यालय बम्हौरी,
वि० ख०- मऊरानीपुर, जनपद- झाँसी

बात महिला शिक्षकों की

बेसकि विभाग से जुड़ी हुई सभी शिक्षिका बहनों को कोटि-कोटि प्रणाम करती हूँ।🙏

आज वर्तमान की स्थिति में जाने किस तरीके से अपने कार्य क्षेत्र को अपने कर्तव्यों के साथ अपने शिक्षक पद के अनुसार कार्य करने में सक्षम हो रही है। पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जब महिला हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है जिसमें से बेसिक शिक्षा विभाग की महिला शिक्षिका जिसके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी होती है साथ ही बच्चों का लालन - पालन होता है और अपने जीविकोपार्जन के लिए जब वह एक अध्यापक के रूप में विद्यालय जाती है तो उसको अपने कर्तव्य के पालन के साथ, समय पर विद्यालय पहुँचना होता है और बच्चों को उचित शिक्षा देनी होती है। शिक्षिका की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण है कि घर परिवार के साथ-साथ विद्यालय की जिम्मेदारी भी उसको निभानी है इस दुनिया में अपने बारे में नही सोच सकती, समय ही नही मिलता क्योंकि जरूरी नहीं कि सबको विद्यालय घर के पास ही मिल जाए कुछ को ही यह सुख सुविधा मिलती है लेकिन अधिकतर हमारी शिक्षिका बहनें 50-50 किलोमीटर दूर सर्विस करने जाती हैं। मार्ग में कितने वाहन बदलने पड़ते हैं, पैदल चलना पड़ता है और स्कूल पहुँचने की जल्दीबाजी में हादसे का शिकार भी हो जाती हैं जब हम घर में सारा काम करके घर को छोड़कर जाते हैं तो जान हथेली पर रखकर जाते हैं पता नही कि शाम को वापस आएँगे कि नही लेकिन मन में तो एक चिंता लगी रहती है कि कैसे भी करके विद्यालय पहुँचें यदि कुछ देर हो जाए तो रेड लाइन लग जाती है लेकिन हिम्मत नहीं हारी जाती है। उसका डट के सामना करने के लिए तैयार रहती हैं। महिला शिक्षकों की वजह से ही प्राथमिक और जूनियर स्तर पर नामांकन में बढ़ोतरी हुई और यही उनकी आवश्यकता थी क्योंकि कन्यासुलभ वातावारण इन विद्यालयों में बहुत जरूरी था। अच्छी तरीके से बच्चों को देखभाल के साथ उचित शिक्षा भी देने में सक्षम रही बच्चे भी उतना ही प्यार देते थे जितना वह अपनी माँ को देते हैं। इसलिए बेसिक विभाग में शिक्षिकाओं को वरीयता मिली और उनकी परेशानी जरूरत को समझा गया। उनको हर क्षेत्र में ड्यूटी निभाने का कार्य भी शुरू हो गया चाहें बीएलओ की ड्यूटी हो, चाहें चुनाव ड्यूटी हो, चाहें पोलियो हो, जनगणना हो, कोरोना वैक्सीन आदि सभी में अपनी भूमिका निभाई। बढ़ी सक्रियता के साथ इसी बीच यदि कोई बहन परेशानी से गुजरती है तो उसकी सुनवाई नहीं होती बड़ी कोशिश के बाद सुनवाई सुनी जाती है। बीएसए ऑफिस के चक्कर भी काटने पड़ते हैं इसलिए हर प्रदेश जनपद जिले में महिला शिक्षक संघ संगठन को बढ़ावा मिला वह वहाँ अपनी परेशानी को बताकर आने लगी यह उनकी परेशानी का निवारण का जरिया भी है। शिक्षिकाओं की आवश्यकता महत्व और परेशानियाँ सभी के लिए हमें और जागरूक होना है ताकि कोई भी हमारी बहन परेशानी से ना गुजरे। शिक्षा के क्षेत्र में सभी साथी भाइयों के साथ जब कंधे से कंधा मिलाकर हर कार्य को करने में सक्षम हैं तो उनकी जरूरत उनकी परेशानी को भी नजरअंदाज न किया जाए। नारी शक्ति तो हमेशा से ही बलशाली है और सभी कार्य को करने में सक्षम भी है। चाहें घर परिवार हो या विद्यालय वह कभी पीछे नही हटती। यही उसकी महानता है कि हर कार्य को ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्य के साथ निभाने में सक्षम है। इसी का नाम महिला शिक्षक नारी शक्ति है।

पुष्पा शर्मा (शिक्षामित्र)
प्राथमिक विद्यालय राज़ीपुर,
वि० ख०- अकराबाद, जनपद- अलीगढ़

गतिविधि

एक के तीन

विषय- भाषा (हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी)

कक्षा- 3, 4, 5

उद्देश्य- बच्चों के शब्द भण्डार में वृद्धि करना।

सामग्री- हिन्दी, अंग्रेजी व संस्कृत भाषा के समान अर्थ वाले शब्दों की कागज की पर्चियाँ।

सबसे पहले कक्षा में बच्चों को तीन या उससे ज्यादा पंक्तियों में बैठा लेते हैं। फिर पहले से लिखी हुई 30 बच्चों हेतु हिन्दी के शब्द लिखी हुई 10 पर्चियों, समान अर्थ वाली संस्कृत शब्दों की 10 पर्चियों और समान अर्थ वाली अंग्रेजी की 10 पर्चियों को आपस में व्यतिक्रम कर मिला लेते हैं।

पंक्तिबद्ध बैठे बच्चों में पर्चियों को बाँट देते हैं। फिर बच्चों को अपनी जगह पर खड़े होकर कक्षा में तितली की तरह हाथ फैलाकर गति करने को कहते हैं। इसी बीच आवाज देते हैं 'एक के तीन'। बच्चे समान अर्थों वाली तीनों पर्चियाँ अपने कक्षा साथियों के साथ खोजने में जुट जाते हैं। कुछ समय 3 मिनट बाद जो भी टीम हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत शब्दों वाली समान पर्चियाँ लाती है उनके लिए तालियाँ बजवाई जाती हैं।
नोट- निर्देश के साथ-साथ बच्चों को पर्चियाँ देते समय पर्चियाँ मुड़ी हुई हों जिससे बच्चे निश्चित समय से पहले न देखें।

लाभ-

1- बच्चों के शब्द भण्डार में वृद्धि।

2- बच्चों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा में सहायक।

3- तेज बच्चों के साथ कमजोर बच्चे भी सीखने में सफल।

अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०),
प्राथमिक विद्यालय धवकलगंज,
वि० ख०- बड़ागाँव, जनपद- वाराणसी

योग विशेष

योग और अभ्यास

योग की महत्ता अभ्यास पर निर्भर होती है। कितना भी महत्वपूर्ण योग क्यूँ न हो, बिना अभ्यास के उसका कोई मोल नही और न ही उसका लाभ होता है। इसलिए योग का लाभ तभी होता है जब उसका अभ्यास नियमित रूप से किया जाता है।

अभ्यास होना भी कई तरीके से होता है। वही अभ्यास प्रभावी होता है जो नियमित ढंग से व निरन्तर किया जाता है। अभ्यास की निरन्तरता के साथ ही साथ इसका व्यवस्थित होना भी आवश्यक होता है। व्यवस्थित अभ्यास की प्राप्ति भी एक महत्वपूर्ण तथ्य होता है। इसमें समय अधिक लगता है। बिना निरन्तरता को खोए हुए पूर्ण आदर व सम्मान के साथ इसे ग्रहण करने के प्रयास से इसकी प्राप्ति होती है और इस प्रकार के प्रयासों से यह प्रतिस्थापित हो जाता है।

जीवन में किसी भी बहुमूल्य वस्तु को प्राप्त करने के लिए उसके उसके प्रयासों में समय लगता है। किसी भी कला को सीखने में समय लगता है, चाहें वह पाककला हो, गिटार हो, सितार हो अथवा बाँसुरी आदि और अगर विशेषज्ञ होना हो तो निश्चित ही उससे भी अधिक समय देना पड़ेगा और यही नही पूरी निष्ठा व स्थिर चित्त से उसका रियाज़ करना पड़ेगा और यही रियाज़ अभ्यास कहलाता है।

योग की जितनी भी विधाएँ हैं अथवा जितने भी आसन आदि हैं उन सबका लाभ तभी हो सकता है जब हम इनका अभ्यास नियमित और सही ढंग से करेंगे। किसी भी चीज़ को सीखने के लिए हमें एक गुरु अथवा शिक्षक की आवश्यकता होती है। अगर हमें खिलाड़ी बनना है तो हमें किसी खेल प्रशिक्षक के साथ खेल का अभ्यास करना पड़ेगा। अगर हमें व्यायाम करना है तो किसी व्यायामशाला में प्रशिक्षक की देखरेख में करना पड़ेगा और इन सब में समय लगता है। रातों रात न ही हम स्टार खिलाड़ी बन सकते हैं और न ही बलशाली बन सकते हैं। शरीर के विकास के लिए समय लगता है किन्तु मन के विकास व स्थिरता के लिए और अधिक समय की आवश्यकता होती है। जब हम कुछ याद करना चाहते हैं तो उसमें कुछ समय देना होता है उसी प्रकार किसी भी अभ्यास के लिए समय की आवश्यकता है। हालाँकि उसके लिए बहुत अधिक समय नही हो किन्तु जरूरत के अनुसार उपयुक्त व पर्याप्त समय देना आवश्यक है।

प्रायः हम हम शुरुआत में सीखते हैं और कुछ समय बाद छोड़ देते हैं और फिर से अभ्यास शुरू करते हैं। जब मन होता है अभ्यास करते हैं और जब मन नही होता है तो आलस्य में रहते हैं। इस प्रकार हमारा सम्बन्ध टूट जाता है। इस तरह से यह कहा जा सकता है कि निरन्तर स्मरण ही अभ्यास है। दृढ़ता, निरन्तरता और अभ्यास के अभाव में हम कोई भी कला नही सीख सकते हैं। किसी भी कला को सीखने के लिए हमें निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता होती है और उसमें निपुणता के लिए दीर्घकाल तक अभ्यास की आवश्यकता होती है।

अभ्यास में मन की स्थिति, प्रसन्नता, उत्साह व सन्तुष्टि की विशेष भूमिका होती है अर्थात बिना प्रसन्न मन के, उत्साह के अभाव में असन्तुष्ट होकर किया गया अभ्यास, अभ्यास की श्रेणी में नही रखा जा सकता है। जब तक अभ्यास में आदर, सम्मान व कृतज्ञता न हो तब तक वह अभ्यास नही माना जाता है। इस प्रकार योग व अभ्यास दोनों ही एक-दूसरे से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं। अभ्यास के बिना योग का महत्व नही और न ही योग का कोई लाभ होता है।

बबलू सोनी (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय उतरार
वि० ख०- बाबागंज, जनपद- प्रतापगढ़

खेल

चौपड़ का खेल

चौपड़ का खेल अतिप्राचीन खेल है। इसे पुराने समय से लोग खेलते आ रहे हैं। इस खेल को बूढ़े, बच्चे सभी बहुत ही आनंद के साथ खेलते हैं। इस खेल की जड़ें प्राचीन भारत से जुडी हुई हैं। इसका उदाहरण हमें महाभारत में भी देखने को मिलता है।

इस खेल की उत्पत्ति कही और नही बल्कि भारत में ही हुई थी। पहले इसे मोक्ष पातम अथवा ज्ञान चौपड़ के नाम से जाना जाता था। धीरे-धीरे समय बदलता गया और समय-समय पर इस खेल के स्वरूप में भी परिवर्तन होता आया। स्वरूप के साथ ही साथ इसके नाम में परिवर्तन हुआ। इसे स्नेक एंड लेडर के नाम से भी जाना जाता है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार इस खेल का अविष्कार तेरहवी सदी में सन्त ज्ञानेश्वर ने किया था। किन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार इस खेल का आरम्भ द्वितीय शताब्दी में हुआ था। इस खेल का मुख्य उद्देश्य बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करना है।

इन खेल का उद्देश्य मनुष्य के बुरे कर्मो से छुटकारा एवं जीवन मरण के इस बन्धन से मुक्ति अर्थात मोक्ष की प्राप्ति थी।

प्राचीन काल की बात करें तो यह खेल आपके गुणों एवं दोषों को दर्शाता था। उदाहरण के लिए यदि आप अच्छे कर्म करते हैं तो आप सीधे 100वें पायदान पर पहुँचकर कैलाश पर्वत पहुँच गये और अगर बुरे कर्म करते हैं तो साँप के काटने के कारण आप सीधे पाताल में चले जाएँगे। इस प्रकार इस खेल के द्वारा बच्चों को आनन्द बुरे कर्मो के नतीजों की शिक्षा दी जाती थी।

भारत में शुरुआत में यह खेल कपड़ों और कागजों पर बना होता था। 18वी शताब्दी में यह बोर्ड पर बनने लगा। 19वी शताब्दी में यह खेल इंग्लैण्ड जा पहुँचा। उन्होंने इसमें अपने अनुसार कुछ फेरबदल भी कर लिए। उन्होंने इसमें से धार्मिक विचार को अलग करते गए साँप व सीढ़ियों को समान कर दिया। 1943 में यह अमेरिका में भी देखने को मिला। वहाँ पर इसका परिचय मिल्टन ब्रेडले ने कराया व इस खेल का नाम शूट एंड लैडरर्स रखा गया।

इस खेल में चौखाने बने होते हैं, जो गुण एवं अवगुण को दर्शाते हैं। जिस खाने में सीढ़ी होती है वह गुण व जिसमे साँप का फन होता है वह अवगुण दर्शाता है। भारत में यह खेल अच्छे और बुरे कर्मो के विषय में बताता है। खेल में मौजूद सीढ़ियाँ अच्छे गुणों जैसे दया, विश्वास व विनम्रता को दर्शाती हैं। दूसरी ओर साँप बुराई, हत्या और क्रोध को दर्शाता है।

आज की बात करें तो यह खेल आपकी किस्मत पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए यदि आप 98 पर पहुँच गए हैं और आपको 2 अंक की जरूरत है। अगर आपका 2 अंक आया तब तो आप जीत जाएँगे लेकिन आपका यदि 1 आया तो आप 99 पर जाएँगे और साँप के डसने के कारण आप फिर आए खेल की शुरुआत में पहुँच जाएँगे। इसमें आनन्द बहुत आता है। आधुनिक समय में तो इसे स्मार्ट फोन पर दूर बैठे किसी व्यक्ति के साथ भी खेला जा सकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि चौपड़ का खेल बहुत ही आनन्ददायक खेल होता है। इसे बूढ़े और बच्चे दोनों ही बहुत प्रेम से खेलते हैं। इसके माध्यम से बच्चों में अच्छे व बुरे कर्मो की समझ विकसित होती है और वे स्वयं इन्हें पहचानने व इनमें फर्क करना सीखते हैं।

रूमी गम्भीर (स०अ०),
कम्पोजिट विद्यालय इटैली,
वि० ख०- हथगाम, जनपद- फ़तेहपुर

सदविचार
मुंशी प्रेमचंद

"कलम जिसकी मिसाल बन गई, साहित्य में इनका बड़ा नाम कर गई।"

धनपत राय श्रीवास्तव जो प्रेमचंद नाम से जाने जाते हैं वह हिंदी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार कहानीकार और विचारक थे। प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही गाँव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम आनंदी देवी व पिता का नाम अजायब राय था, जो लमही में डाक मुंशी थे। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। बहुत कम उम्र में ही उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया था। अल्पायु में ही उन्होंने बहुत कुछ अनुभव प्राप्त कर लिया था। माता का निधन, पिता द्वारा दूसरा विवाह, सौतेली माता का व्यवहार, पिता का निधन, कम उम्र में विवाह, किसानों का दुःखी जीवन, पांडे पुरोहित का कर्मकांड।
इन सबका उनके मन पर बहुत गहरा असर पड़ा। बचपन से ही पढ़ने में इन्हें बहुत रुचि थी। छोटी सी उम्र में ही इन्होंने बहुत अधिक साहित्य पढ़ लिया था।

इनके कुछ अनमोल विचार निम्नलिखित हैं-

1. कुल की प्रतिष्ठा भी सद्व्यवहार और विनम्रता से होती है, हेकड़ी और रौब दिखाने से नही।

2. आदमी का सबसे बड़ा शत्रु उसका अहंकार है।

3. सोने और खाने का नाम जिंदगी नही है, आगे बढ़ते रहने की लगन का नाम जिंदगी हैं।

4. जवानी आवेशमय होती है, वह क्रोध से आग बन जाती है तो करुणा से पानी भी।

5. जिस बंदे को दिन की पेट भर रोटी नही मिलती, उसके लिए इज्जत और मर्यादा सब ढोंग है।

6. अन्याय होने पर चुप रहना, अन्याय करने के ही समान है।

7. कार्यकुशल व्यक्ति की सभी जगह जरुरत पड़ती है।

8. देश का उद्धार विलासियों द्वारा नही हो सकता। उसके लिए सच्चा त्यागी होना पड़ेगा।

9. निराशा सम्भव को असम्भव बना देती है।

10. जीवन का वास्तविक सुख, दूसरों को सुख देने में है; उनका सुख छीनने में नही।

इला सिंह (स०अ०),
कम्पोजिट विद्यालय पनेरुआ,
वि० ख०- अमौली, जनपद- फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमर :- मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका "शिक्षण संवाद" बेसिक शिक्षकों का आपसी सीखने - सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदाई होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्च कोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए सम्पादक मण्डल दावा नही करता है। किसी भी सुझाव शिकायत के लिए मिशन के ई-मेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप नम्बर 9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. ट्विटर एकाउण्ट https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू-टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं० : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. टेलीग्रामः https://t.me/missionshikshansamvad
9. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद